कल की कवि गोष्ठी के लिए रवि मोहन जी व हस्ताक्षरम् के साथ साथ कवि अल्हड़ असरदार को हार्दिक धन्यवाद। कार्यक्रम की सफलता में शर्मा परिवार का योगदान व समर्पण उल्लेखनीय रहा।

सबको धन्यवाद।। अन्वेषी

"सच्ची खोज अच्छी खबर"

ज्ञान सरोवर

R.N.I.Reg.No.MAHHIN/2009/27377 (हिन्दी साप्ताहिक) डाक पंजीकरण संख्या- MH/MR/North East/237/2012-14

वर्ा : 16 अंक : 19 (प्रत्येक गुरूवार) मुम्बई, 23 मई से 29 मई, 2024 पृठ : 8 मूल्य : 2.00 रूपये

भाजपा आरएसएस पर प्रतिबंध लगाने की योजना बना रही है :उद्धव ठाकरे

मुंबई (संवाद सूत्र)। शिवसेना (यूबीटी) के प्रमुख उद्धव ठाकरे ने दावा किया कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) तीसरी बार चुनाव जीतने के बाद, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) पर प्रतिबंध लगाने की योजना बना रही है। महाराष्ट्र में लोकसभा चुनाव के लिए प्रचार अभियान के समापन से पहले यहां अपनी आखिरी रैली को संबोधित करते हुए ठाकरे ने यह भी कहा कि ''मोदी के नौकर की तरह व्यवहार कर रहे'' निर्वाचन आयुक्त को विपक्षी 'इंडिया' गठबंधन के सत्ता में आने के बाद हटा दिया जाएगा। उन्होंने कहा, ''जिस तरह उन्होंने शिवसेना का 'उपयोग करो और फेंक दो' तरीके से इस्तेमाल किया, वही खेल भविष्य में (आरएसएस के साथ) खेला जाएगा और यह बात (भाजपा अध्यक्ष जे पी) नड्डा ने कही है।'' ठाकरे एक अखबार में छपे नड्डा के इस बयान का हवाला दे रहे थे कि जब भाजपा छोटी पार्टी थी और कम ताकतवर थी, तब उसे आरएसएस की जरूरत थी लेकिन अब भाजपा बड़ी एवं अधिक मजबूत हो गयी है तथा वह ''अपना संचालन खुद'' करती है। ठाकरे ने दावा किया, ''नड्डा ने दावा किया कि अबतक आरएसएस की जरूरत थी, (लेकिन) अब हम समर्थ हैं और हमें आरएसएस की जरूरत नहीं है। यदि वे (भाजपा) सत्ता में आते हैं तो यह आरएसएस के स्वयंसेवकों के लिए बड़ा खतरा होगा क्योंकि वे (भाजपा) आरएसएस पर प्रतिबंध लगा देंगे।'' उन्होंने कहा कि अतीत में (तत्कालीन गृहमंत्री) सरदार वल्लभभाई पटेल ने आरएसएस पर प्रतिबंध लगा दिया था। ठाकरे ने सवाल किया, ''आरएसएस के सारे कार्यकर्ता आपको (नरेन्द्र मोदी को)प्रधानमंत्री बनाने के लिए कड़ी मेहनत करते हैं। ऐसे में, आप आरएसएस पर प्रतिबंध लगाने की योजना क्यों बना रहे हैं जिसने आपको राजनीतिक ताकत दी।'' उन्होंने निर्वाचन आयोग पर निशाना साधते हुए कहा, ''इंडिया गठबंधन के सत्ता में आने के बाद हमें निर्वाचन आयुक्त को घर भेजना होगा जो मोदी के नौकर की तरह व्यवहार कर रहे हैं।'' महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री ठाकरे ने कहा कि जो भी भाजपा शासन के ''नौकर'' की तरह काम कर रहा है, उसे बर्खास्त कर दिया जाएगा।

कांग्रेस ने आपातकाल लगाकर संविधान में बदलाव की साजिश रची थी: प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी

नयी दिल्ली(संवाद सूत्र)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि कांग्रेस ने आपातकाल लागू करके संविधान में बदलाव की साजिश रची थी। उन्होंने विपक्षी दल पर संविधान को लेकर देश में झूठ फैलाने का आरोप भी लगाया और कहा कि वह उसे एससी, एसटी और ओबीसी का आरक्षण नहीं छीनने देंगे। मोदी ने यहां एक रैली में कहा, दोस्तो, इंडी गठबंधन की नाव डूब रही है। उनके पास केवल एक ही सहारा है- झूठ। वे बार-बार झूठ बोल रहे हैं। वे संविधान के बारे में झूठ फैला रहे हैं। कांग्रेस आरोप लगा रही है कि लोकसभा चुनाव के लिए भाजपा के ४०० पार नारे का उद्देश्य संविधान को बदलना और अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और पिछड़े वर्गों का आरक्षण समाप्त करना है। विपक्षी दल के इस आरोप पर उनकी आलोचना करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा, संविधान को खतरा किससे है? आप बताएं, आपातकाल लगाकर संविधान में बदलाव की साजिश किसने रची ? मोदी ने कहा, इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने कांग्रेस की तानाशाही पर लगाम लगाई थी। रायबरेली में लोकतंत्र को लूटने की कोशिश की गई थी। उच्च न्यायालय ने चुनाव रद्द कर दिया और इंदिरा गांधी को चुनाव लड़ने से रोक दिया। उन्होंने कहा, इतने साल बीत गए, फिर भी कांग्रेस का चरित्र नहीं बदला।

पूरा देश कह रहा जो राम को लाए हैं हम उनको लाएंगे, विपक्ष को नहीं दिखता, सपा पर मुख्यमंत्री योगी का वार

लखनऊ (संवाददाता)। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अलग-अलग जगहों पर चुनावी जनसभा को संबोधित किया। इस दौरान योगी ने कहा कि कांग्रेस के शासनकाल में तत्कालीन प्रधानमंत्री कहा करते थे कि १०० पैसे भेजे जाते हैं लेकिन जनता तक केवल १५ पैसे ही पहुंचते हैं। यह स्थिति आज नहीं है। आज आपके पास जनधन खाता है। पैसा सीधे आपके खाते में आता है... हम लखनऊ वाले बस एक बार क्लिक करते हैं और अगले ही पल पैसा हमारे पास पहुंच जाता है। संतकबीर नगर में एक सार्वजनिक रैली को संबोधित करते हुए योगी ने कहा कि पूरे देश में एक ही आवाज गूंज रही है। फिर एक बार मोदी सरकार, अब की बार ४०० पार। जब भी हम ४०० सीट पार करने की बात करते हैं तो समाजवादी पार्टी सोचती है कि कोई ४०० सीट का आंकड़ा कैसे पार कर सकता है? लोगों के बीच से एक आवाज आती है जो कहती है कि जो भगवान राम को लेकर आए हम उन्हें लाएंगे। योगी आदित्यनाथ ने कहा कि 'इंडी' गठबंधन जनता को जाति और धर्म में बांटकर देश को लूटना चाहता है। मुख्यमंत्री आदित्यनाथ ने श्रावस्ती लोकसभा क्षेत्र से भाजपा उम्मीदवार साकेत मिश्र और गैसड़ी विधानसभा उपचुनाव के प्रत्याशी शैलेश कुमार सिंह शैलू के पक्ष में आयोजित एक चुनावी जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि 'इंडी' गठबंधन जनता को जाति और धर्म में बांटकर देश को लूटना चाहता है। योगी आदित्यनाथ ने गैसड़ी विधानसभा क्षेत्र में आयोजित जनसभा में कहा, ''भाजपा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में जनता जनार्दन की सेवा कर रही है। हम भेदभाव नहीं करते बल्कि 'सबका साथ, सबका विकास' के भाव के साथ काम कर रहे हैं। वहीं, 'इंडी' गठबंधन जनता को जाति और धर्म में बांटकर देश को लूटना चाहता है, जिसे हम होने नहीं देंगे।'' मुख्यमंत्री ने कहा, ''जनता भी उनके मंसूबों को जान गयी है इसलिए वह एक स्वर में कह रही है कि 'एक बार फिर मोदी सरकार और अब की बार ४०० पार।' जनता इन्हें जवाब दे रही है कि 'जो राम को लाए हैं हम उन्हें लाएंगे'।'' उन्होंने आरोप लगाया कि समाजवादी पार्टी (सपा) और कांग्रेस गठबंधन के लोग ''राम विरोधी, देश विरोधी और गरीब विरोधी'' हैं और वे अनुसूचित जाति, जनजाति और पिछड़ी जाति के लोगों के ''हक पर सेंधमारी का कुत्सित प्रयास'' कर रहे हैं। योगी ने कहा, ''समाजवादी पार्टी और कांग्रेस गठबंधन सत्ता हासिल करने के लिए तरह-तरह के गुल खिला रहा है और उनके कारनामे जनता से छिपे नहीं हैं। यह (गठबंधन) देश से गरीबी हटाने के लिए हमारे पूर्वजों की संपत्ति का सर्वेक्षण कराने की बात कह रहा है।''

कांग्रेस अध्यक्ष खरगे ने हरियाणा में रैली में कहा- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 'झूठों के सरदार' हैं

जगाधरी। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को 'झूठों का सरदार' कहा और दावा किया कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) लोकतंत्र को समाप्त करना चाहती है। हरियाणा में अपनी पहली रैली को संबोधित करते हुए खरगे ने कहा कि लोग भाजपा से तंग आ चुके हैं। उन्होंने कहा, ''कुछ लोग हैं जो 'मोदी मोदी' चिल्लाते हैं। वह 'झूठों के सरदार' हैं, फिर भी आप 'मोदी मोदी' करते हैं। मैं किसी को गाली नहीं देना चाहता और मैं मोदी के खिलाफ नहीं हूं। लेकिन मैं मोदी की विचारधारा के जरूर विरुद्ध हूं और मैं इसके खिलाफ लड़ रहा हूं।'' खरगे ने कहा कि उनकी पार्टी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) और भाजपा की विचारधारा से लड़ रही है। उन्होंने भाजपा पर निशाना साधते हुए कहा, ''आप लोकतंत्र को समाप्त करना चाहते हैं और हम इसके खिलाफ लड़ रहे हैं।'' कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा, ''मोदी जी आपको लगता है कि आप समझदार हैं। इस देश की जनता आपसे ज्यादा समझदार है। लोग आपके खिलाफ लड़ रहे हैं।'' खरगे ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी ने हर नागरिक के बैंक खाते में १५ लाख रुपये डालने, हर साल दो करोड़ नौकरी देने और किसानों की आय दोगुनी करने का वादा किया था।

होश उड़ाने वाली - ये युवा लड़कियां श्रीमद्भगवद गीता के ७०० संस्कृत श्लोकों के साथ अंताक्षरी खेल रही हैं और उनकी गति और सहजता अद्भुत है। गीताप्रेस गोरखपुर, के १०० साल पूरे होने पर इसका आयोजन किया गया।

जय श्रीराम

सत्य के संवाहक हो तुम
धर्म-ध्वजा के वाहक हो तुम
सत्य की जय करने वाले
सनातन गर्व के लायक हो तुम ।

धर्म निष्ठ हो कर्म निष्ठ हो
तुम पुरुषोत्तम रघुकुल गौरव
वाणी की सौगंध निष्ठ हो
तुम मर्यादा के उच्च शिखर
आचरण से उच्च प्रतिष्ठ हो ।

धर्म-ध्वजा के वाहक हो तुम
सनातन गर्व के लायक हो तुम ।

दसरथ के आदर्श पुत्र तुम
कौशल्या के प्यारे राम तुम
भ्राताओं के भईया श्रीराम
लोकों में भगवन प्रतिष्ठ हो ।

धर्म-ध्वजा के वाहक हो तुम
सनातन गर्व के लायक हो तुम ।

तुम्हें अयोध्या प्राण से प्यारी
स्वर्ग से सुंदर महिमा न्यारी
आदर्श राज्य तुम्हारा शासन
रामराज की कल्पना निर्दिष्ट हो ।

धर्म-ध्वजा के वाहक हो तुम
सनातन गर्व के लायक हो तुम ।

बदन साँवला कमल नयन हो
अज़ानबाहु कोमल चितवन हो
योद्धा अजेय और सुलभ बालपन
कामरूप में अतुल्य बलिष्ठ हो ।

-बागी

Gyan Sarovar Mount Abu me B k Shivani bahan international speaker ke sath me P P Pandey Editor Gyan Sarovar News paper Mulund West Mumbai

"एक नेक शख्स की शख्सियत, उसके मरने के बाद भी लोगों के दिलों में ज़िंदा रहती है

व्यक्ति के लिए "वो है से वो था", होने में बमुश्किल एक सेकण्ड लगता है; इसलिए अपनी झूठी हस्ती का गुरुर करने के बजाय, बस "है और था" का मर्म समझ लो तो, बाकी सब एकदम स्पष्ट हो जाएगा"|||

कहते हैं कि बदला लेने की तमन्ना रखने वालों से कह दो कि व्यर्थ अपना वक्त बर्बाद मत करो, क्योंकि...

ध्यान रहे कि जिसने भी बदला लेने की ठानी, वक्त ने ऐसा मोड़ लिया और इतनी जोर से मारा कि वो कभी खुद को फिर से नहीं बदल पाए और अंत में उनके नसीब में पश्चाताप ही आया|||

ओम शांति

मोहन शोध संस्थान व हस्ताक्षरम् के साहित्य समागम् मे गीतों की धूम

मोहन शोध संस्थान व हस्ताक्षरम् साहित्यिक संस्था के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित साहित्य समागम् रविवार दिनांक १९ मई को ऑक्टाक्रेस्ट सोसाइटी, कांदिवली पूर्व में सम्पन्न हुआ।

साहित्य गोष्ठी की अध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार हौसला प्रसाद अन्वेषी ने किया। मुख्य अतिथि श्री जवाहरलाल निर्झर व विशिष्ट अतिथि श्री राम सिंह जी की उपस्थिती में अल्हड़ असरदार ने संचालन किया। उपस्थित साहित्यकारों में श्री रवि मोहन अवस्थी, डॉ. मृदुल महक, श्रुति भट्टाचार्य, नीरज कुमार, नरेंद्र शर्मा खामोश, आत्मिक श्रीधर मिश्र, पूजा पाण्डेय, किरण तिवारी, अंजनी कुमार द्विवेदी, एड्वो. राजीव मिश्र, अजय बनारसी, नियति शुक्ल, सतीश शुक्ल रकिब, कल्पेश यादव, सुनीता शर्मा सिंह, अन्नपूर्णा गुप्ता सरगम, बिट्टू जैन शना व डॉ. प्रमोद पल्लवित ने अपनी रचनाओं का पाठ किया।

डॉ. मृदुल महक द्वारा वाणी वंदना के पश्चात मोहन शोध संस्थान के संस्थापक अध्यक्ष श्री रवि मोहन अवस्थी जी ने सन १९९६ में स्थापित संस्थान का इतिहास सभी के समक्ष रखते हुए संस्थान के उद्देश्यों से सभी को अवगत कराया तथा मुंबई इकाई के संयोजन की जिम्मेदारी अल्हड़ असरदार के कंधों पर देते हुए हर माह संस्थान द्वारा इस प्रकार के आयोजन का संकल्प लिया। सभी अतिथियों का सम्मान अंगवस्त्र व पुष्पमाला से किया गया। इस अवसर पर २०१९ में स्थापित संस्था हस्ताक्षरम् के संस्थापक अध्यक्ष श्री वाचस्पति तिवारी जी का महानरिय साहित्यिक आयोजनों में विनम्र योगदान के लिए सम्मान किया गया। सायं ५.३० को प्रारंभ हुआ कार्यक्रम रात ९.३० तक चला जिसमें हास्य व्यंग्य, श्रृंगार, वीररस, वात्सल्य रस, करूण रस आदि रसों से भरपूर रचनाओं का पाठ हुआ जिसमें गीत विधा की भरमार रही श्रोताओं ने भी तालियों के द्वारा कवियों का साथ दिया। अध्यक्ष श्री अन्वेषी जी ने आयोजन की प्रशंसा करते हुए, सभी रचनाओं का विश्लेषण किया व अपनी शुभकामनायें दी। आयोजक नीरज शर्मा जी के प्रतिनिधि के तौर पर सुनीता शर्मा सिंह ने सभी का आभार व्यक्त किया व चायपान के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

सच में कल अत्यंत ही आनंद की अनभूति हुई। आदरणीय अल्हड असरदार जी के अभूतपूर्व और शानदार संचालन ने हम सबका मन मोह लिया । उनके संचालन में काव्य पाठ करने का मौका पाना मेरे लिए बड़े सौभाग्य की बात है। आदरणीय रवि अवस्थी जी का सानिध्य भी मिला। सभी कवि और कवित्रियों का उन्होंने अच्छे से स्वागत किया ।उनके काव्य पाठ ने हम सभी को, काव्य रचना की परिकाष्ठा का एहसास कराया। बाकी कवि और कवित्रियों को सुनकर मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला। एक से एक प्रतिभावान कवियों और कवित्रियों के बीच खुद को पाकर मैं तो धन्य हो गया।

परम आदरणीय हौसला जी की समीक्षा से अपनी कविता की गुणवत्ता को जाने का मौका मिला। कल हमसबों की एक बहुत ही सुहानी शाम रही ,जिसके यादगार पलों को मैं कभी नहीं भुला सकता।

सभी को बहुत बहुत धन्यवाद

मोहन शोध संस्थान व हस्ताक्षरम् के साहित्य समागम् मे गीतों की धूम

मोहन शोध संस्थान व हस्ताक्षरम् साहित्यिक संस्था के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित साहित्य समागम् रविवार दिनांक १९ मई को ऑक्टाक्रेस्ट सोसाइटी, कांदिवली पूर्व में सम्पन्न हुआ। साहित्य गोष्ठी की अध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार हौसला प्रसाद अन्वेषी ने किया। मुख्य अतिथि श्री जवाहरलाल निर्झर व विशिष्ट अतिथि श्री राम सिंह जी की उपस्थिती में अल्हड़ असरदार ने संचालन किया। उपस्थित साहित्यकारों में श्री रवि मोहन अवस्थी, डॉ. मृदुल महक, श्रुति भट्टाचार्य, नीरज कुमार, नरेंद्र शर्मा खामोश, आत्मिक श्रीधर मिश्र, पूजा पाण्डेय, किरण तिवारी, अंजनी कुमार द्विवेदी, एड्वो. राजीव मिश्र, अजय बनारसी, नियति शुक्ल, सतीश शुक्ल रकिब, कल्पेश यादव, सुनीता शर्मा सिंह, अन्नपूर्णा गुप्ता सरगम, बिट्टू जैन शना व डॉ. प्रमोद पल्लवित ने अपनी रचनाओं का पाठ किया। डॉ. मृदुल महक द्वारा वाणी वंदना के पश्चात मोहन शोध संस्थान के संस्थापक अध्यक्ष श्री रवि मोहन अवस्थी जी ने सन १९९६ में स्थापित संस्थान का इतिहास सभी के समक्ष रखते हुए संस्थान के उद्देश्यों से सभी को अवगत कराया तथा मुंबई इकाई के संयोजन की जिम्मेदारी अल्हड़ असरदार के कंधों पर देते हुए हर माह संस्थान द्वारा इस प्रकार के आयोजन का संकल्प लिया। सभी अतिथियों का सम्मान अंगवस्त्र व पुष्पमाला से किया गया। इस अवसर पर २०१९ में स्थापित संस्था हस्ताक्षरम् के संस्थापक अध्यक्ष श्री वाचस्पति तिवारी जी का महानरिय साहित्यिक आयोजनों में विनम्र योगदान के लिए सम्मान किया गया। सायं ५.३० को प्रारंभ हुआ कार्यक्रम रात ९.३० तक चला जिसमें हास्य व्यंग्य, श्रृंगार, वीररस, वात्सल्य रस, करूण रस आदि रसों से भरपूर रचनाओं का पाठ हुआ जिसमें गीत विधा की भरमार रही श्रोताओं ने भी तालियों के द्वारा कवियों का साथ दिया। अध्यक्ष श्री अन्वेषी जी ने आयोजन की प्रशंसा करते हुए, सभी रचनाओं का विश्लेषण किया व अपनी शुभकामनायें दी। आयोजक नीरज शर्मा जी के प्रतिनिधि के तौर पर सुनीता शर्मा सिंह ने सभी का आभार व्यक्त किया व चायपान के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

पूज्यनीय,अभिनंदनीय, वंदनीय व प्रणम्य व्यक्तित्व आशु कविता के सशक्त हस्ताक्षर स्वर्गीय जगमोहन अवस्थी जी को सादर प्रणाम करता हूँ। शत-शत नमन करता हूँ। शानदार स्मृतियों के साथ आदरणीय अवस्थी जी के महनीय कार्यों का श्रेष्ठ उदाहरण। असली मजा तो तब आता है जब आपके सम्पूर्ण अच्छाइयों का या आपके गुणों का बखान जब दूसरा कोई व्यक्ति करता है। प्रातः स्मरणीय पूज्य बाबू जी को नमन करता हूँ।

अंजनी कुमार द्विवेदी, मुंबई से

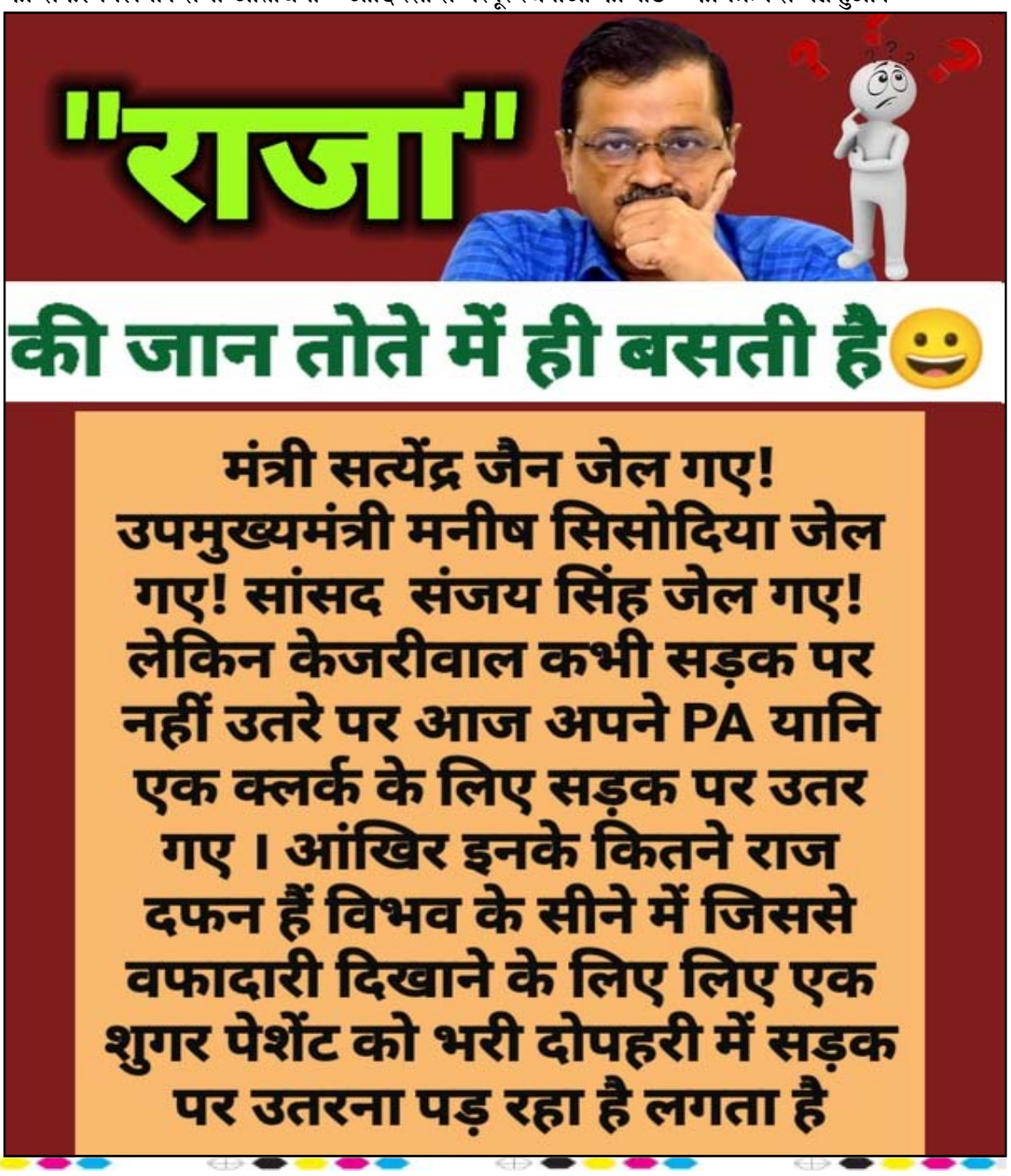

सम्पादकीय...

औसत से ज्यादा वोटिंग क्यों नहीं होती , इस विडंबना की ये है वजह

मौजूदा लोकसभा चुनाव में औसत मतदान ६० प्रतिशत के आसपास रहना निर्वाचन आयोग ही नहीं, राजनेताओं के लिए भी चिंता का विषय है। इससे लोकतंत्र के मूल उद्देश्य पूरे होते नहीं दिखते। स्थिति यह है कि कुल पंजीकृत मतदाताओं के एक चौथाई हिस्से से भी कम का समर्थन पाकर पार्टियां सरकार बना लेती हैं और फिर पूरी आबादी का प्रतिनिधित्व करती हैं। उत्तर और पश्चिम इलाकों में, जहां इस समय प्रचंड गर्मी है, वहां तो कम मतदान हो ही रहे हैं, पर्वतीय क्षेत्रों और दक्षिण राज्यों, जहां गर्मी नहीं है, में भी मतदाताओं में उत्साह नहीं नजर आता है। इसकी एक वजह राजनीतिक व्यवस्था से मोहभंग भी हो सकता है। निर्वाचन आयोग और राजनीतिक दलों की तरफ से मतदाताओं को मतदान के लिए जागरूक करने के तमाम प्रयास किए जाते हैं। लोगों को अपने मताधिकार का उपयोग करने के लिए ऑनलाइन और ऑफलाइन प्रेरित किया जाता है, लेकिन इससे बहुत फर्क नहीं पड़ता। कुछेक अपवादों को छोड़ दें, तो कभी वोटिंग औसत से ज्यादा नहीं बढ़ी। सिर्फ २०१४ और २०१९ में मतदाताओं ने उत्साह दिखाया था और औसतन ६६ प्रतिशत से ज्यादा मतदान हुआ था। सवाल यह है कि ऐसे में क्या उपाय किए जाएं कि मतदाता मतदान करने के लिए प्रेरित हों। कम वोटिंग भारत ही नहीं, दुनिया भर के लोकतांत्रिक देशों के लिए चिंता का विषय है। कई देशों ने मताधिकार का उपयोग करना अनिवार्य कर दिया, तो कुछ देशों ने मतदान नहीं करने पर अलग-अलग तरह से दंड लगाने के कानून बनाए। हालांकि कुछ देशों ने बाद में व्यावहारिक परेशानियों के चलते इसे रद्द कर दिया। सबसे पहले बेल्जियम ने १८९२ में वोटिंग अनिवार्य करने का कानून बनाया। फिर अर्जेंटीना ने १९१४ में और ऑस्ट्रेलिया ने १९२४ में ऐसा ही कानून लागू किया। उसके बाद ऑस्ट्रिया, ब्राजील, मिस्त्र, फिजी, बुल्गारिया, बोलीविया, इटली, ग्रीस, फ्रांस (सिर्फ सीनेट), अमेरिका (कुछ राज्य), मैक्सिको, फिलीपीन, स्विट्जरलैंड, थाईलैंड, स्पेन, तुर्किये, वेनेजुएला, पेरू, पनामा आदि ने भी कानून बनाए। इनमें कुछ देशों ने कानून को आंशिक या पूर्ण रूप से रद्द कर दिया। भारत की स्थिति कुछ भिन्न है। यहां कई बार वोटिंग अनिवार्य करने को लेकर लोकसभा में चर्चा हुई। यही निष्कर्ष निकला कि ऐसा करना व्यावहारिक नहीं होगा। इस संबंध में सबसे पहले चर्चा १९५० में तब शुरू हुई, जब जनप्रतिनिधित्व अधिनियम लागू किया जा रहा था। डॉ. भीमराव आंबेडकर सहित संविधान सभा के कई सदस्यों ने इसे सिरे से नकार दिया। १९९० में दिनेश गोस्वामी कमेटी ने वोटिंग प्रतिशत बढ़ाने के उपायों पर विचार करने के दौरान इसे अनिवार्य किए जाने पर भी गौर किया और अंततः इसे नामंजूर कर दिया। वर्ष २००१ में कंसल्टेशन पेपर ऑफ नेशनल कमीशन रिव्यू द वर्किंग ऑफ द कंस्टीट्यूशन ने इस मुद्दे पर विचार करने के बाद कहा कि वोट नहीं देने पर दंड का प्रावधान रखने से कई जटिलताएं पैदा होंगी। चुनावी खर्च को लेकर गठित तारकुंडे कमेटी ने भी अपनी रिपोर्ट में कहा कि वोटिंग अनिवार्य करने से मतदाताओं में रोष पैदा होगा और इसके दुरुपयोग की ?आशंका रहेगी। बेहतर होगा कि वोटरों को ?मतदान के लिए उत्साहित किया जाए। लोकसभा में २००४ , २००९, २०१२ एवं २०१४ में प्राइवेट बिल पेश किए गए, लेकिन हर बार प्रस्ताव का विरोध हुआ। वर्ष २००९ में इस पर सुप्रीम कोर्ट में जनहित याचिका पेश की गई, जिसमें मताधिकार का उपयोग नहीं करने वाले के घर की बिजली, पानी आदि काटने और आर्थिक दंड लगाने की मांग की गई। कोर्ट ने इसे बेहद अमानवीय बताकर याचिका खारिज कर दी। देश में चुनावों में अशिक्षित और अल्पशिक्षित मतदाताओं में मतदान को लेकर जितना उत्साह दिखता है, उतना प्रबुद्ध वर्ग में नहीं। प्रबुद्ध वर्ग का एक बड़ा हिस्सा आलस और अरुचि की वजह से घर से नहीं निकलता। वोटिंग लिस्ट में गड़बड़ी होना भी कम मतदान का एक कारण है। चुनाव से पहले मतदाता सूची को ठीक से अपडेट नहीं किया जाता और किया भी जाता है, तो उनमें कई त्रुटियां दिखती हैं। लोगों को शिकायत रहती है कि नाम शामिल करने, संशोधन आदि का फॉर्म बूथ लेवल अफसर(बीएलओ) को समय पर देने के बाद भी कुछ नहीं होता। ?यह विडंबना ही कही जाएगी कि दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में पंजीकृत वोटरों में से ४० प्रतिशत वोट ही नहीं देते।

श्रीद्वारिकाधीश का तुलादान

एक बार देवर्षि नारद के मन में आया कि भगवान् के पास बहुत महल आदि हैं, एक-आध हमको भी दे दें तो यहीं आराम से टिक जायें, नहीं तो इधर-उधर घूमते रहना पड़ता है। डॉ० विजय शंकर मिश्र

भगवान् के द्वारिका में बहुत महल थे। नारद जी ने भगवान् से कहा - भगवन ! आपके बहुत महल हैं, एक हमको दो तो हम भी आराम से रहें। आपके यहाँ खाने- पीने का इंतजाम अच्छा ही है। भगवान् ने सोचा कि यह मेरा भक्त है, विरक्त संन्यासी है। अगर यह कहीं राजसी ठाठ में रहने लगा तो थोड़ेदिन में ही इसकी सारी विरक्ति भक्ति निकल जायेगी। हम अगर सीधा ना करेंगे तो यह बुरा मान जायेगा, लड़ाई झगड़ा करेगा कि इतने महल हैं और एकमहल नहीं दे रहेहैं। भगवान् ने चतुराई से काम लिया, नारद से कहा- जाकर देख ले, जिस मकान में जगह खाली मिले वही तेरे नाम कर देंगे ।नारद जी वहाँ चले। भगवान् की तो १६१०८ रानियाँ और प्रत्येक के ११-११ बच्चे भी थे। यह द्वापर युग की बात है। सब जगह नारद जी घूम आये लेकिन कहीं एक कमरा भी खाली नहीं मिला, सब भरे हुए थे। आकर भगवान् से कहा वहाँ कोई जगह खाली नहीं मिली। भगवान् ने कहा फिर क्या करूँ, होता तो तेरे को दे देता। नारद जी के मन में आया कि यह तो भगवान् ने मेरे साथ धोखाधड़ी की है, नहीं तो कुछ न कुछ करके, किसी को इधर उधर शिफ्ट कराकर, खिसकाकर एक कमरा तो दे ही सकते थे। इन्होंने मेरे साथ धोखा किया है तो अब मैं भी इन्हे मजा चखाकर छोड़ूँगा।

डॉ० विजय शंकर मिश्र

नारद जी रुक्मिणी जी के पास पहुँचे, रुक्मिणी जी ने नारद जी की आवभगत की, बड़े प्रेम से रखा। उन दिनों भगवान् सत्यभामा जी के यहाँ रहते थे। एक आध दिन बीता तो नारद जी ने उनको दान की कथा सुनाई, सुनाने वाले स्वयं नारद जी। दान का महत्त्व सुनाने लगे कि जिस चीज़ का दान करोगे वही चीज़ आगे तुम्हारे को मिलती है। जब नारद जी ने देखा कि यह बात रुक्मिणी जी को जम गई है तो उनसे पूछा आपको सबसे ज्यादा प्यार किससे है ? रुक्मिणी जी ने कहा यह भी कोई पूछने की बात है, भगवान् हरि से ही मेरा प्यार है। नारदजी कहने लगे फिर आपकी यही इच्छा होगी कि अगले जन्म में तुम्हें वे ही मिलें। रुक्मिणी जी बोली इच्छा तो यही है। नारद जी ने कहा इच्छा है तो फिर दान करदो, नहीं तो नहीं मिलेंगे। आपकी सौतें भी बहुत है और उनमें से किसी ने पहले दान कर दिया उन्हें मिल जायेंगे। इसलिये दूसरे करें इसके पहले आप ही करदे। रुक्मिणी जी को बात जम गई कि जन्म-जन्म में भगवान् मिले तो दान कर देना चाहियें। रुक्मिणी से नारद जी ने संकल्प करा लिया। अब क्या था, नारद जी का काम बन गया।

नारद जी सीधे सत्यभामा जी के महल में पहुँच गये और भगवान् से कहा कि उठाओ कमण्डलु, और चलो मेरे साथ। भगवान् ने कहा कहाँ चलना है, बात क्या हुई ? नारद जी ने कहा बात कुछ नहीं, आपको मैंने दान में ले लिया है। आपने एक कोठरी भी नहीं दी तो मैं अब आपको भी बाबा बनाकर पेड़ के नीचे सुलाउँगा। सारी बात कह सुनाई।

डॉ० विजय शंकर मिश्र

भगवान् ने कहा रुक्मिणी ने दान कर दिया है तो ठीक है। वह पटरानी है, उससे मिल तो आयें। भगवान् ने अपने सारे गहने गाँठे, रेशम के कपड़े सब खोलकर सत्यभामा जी को दे दिये और बल्कल वस्त्र पहनकर, भस्मी लगाकर और कमण्डलु लेकर वहाँ से चल दिये। उन्हें देखते ही रुक्मिणी के होश उड़ गये। पूछा हुआ क्या ? भगवान् ने कहा पता नहीं, नारद कहता है कि तुमने मेरे को दान में दे दिया। रुक्मिणी ने कहा लेकिन वे कपड़े, गहने कहाँ गये, उत्तम केसर को छोड़कर यह भस्मी क्यों लगा ली ? भगवान् ने कहा जब दान दे दिया तो अब मैं उसका हो गया। इसलिये अब वे ठाठबाट नहीं चलेंगे। रुक्मिणी ने कहा मैंने इसलिये थोड़े ही दिया था कि ये ले जायें। भगवान् ने कहा और काहे के लिये दिया जाता है ? इसीलिये दिया जाता है कि जिसको दो वह ले जाये। अब रुक्मिणी को होश आया कि यह तो गड़बड़ मामला हो गया। रुक्मिणी ने कहा नारद जी यह आपने मेरे से पहले नहीं कहा , अगले जन्म में तो मिलेंगे सो मिलेंगे, अब तो हाथ से ही खो रहे हैं। नारद जी ने कहा अब तो जो हो गया सो हो गया, अब मैं ले जाऊँगा। रुक्मिणी जी बहुत रोने लगी। तब तक हल्ला-गुल्ला मचा तो और सब रानियाँ भी वहाँ इकट्ठी हो गई।

सत्यभामा, जाम्बवती सब समझदार थीं। उन्होंने कहा भगवान् एक रुक्मिणी के पति थोड़े ही हैं, इसलिये रुक्मिणी को सर्वथा दान करने का अधिकार नहीं हो सकता, हम लोगों का भी अधिकार है। नारद जी ने सोचा यह तो घपला हो गया। कहने लगे क्या भगवान् के टुकड़े कराओगे ? तब तो १६१०८ हिस्से होंगे। रानियों ने कहा नारद जी कुछ ढंग की बात करो। नारद जी ने विचार किया कि अपने को तो महल ही चाहिये था और यही यह दे नहीं रहे थे, अब मौका ठीक है, समझौते पर बात आ रही है। नारद जी ने कहा भगवान् का जितना वजन है, उतने का तुला दान कर देने से भी दान मान लिया जाता है। तुलादान से देह का दान माना जाता है। इसलिये भगवान् के वजन का सोना, हीरा, पन्ना दे दो। इस पर सब रानियाँ राजी हो गईं। बाकी तो सब राजी हो गये लेकिन भगवान् ने सोचा कि यह फिर मोह में पड़ रहा है। इसका महल का शौक नहीं गया। भगवान् ने कहा तुलादान कर देना चाहिये, यह बात तो ठीक है।

डॉ० विजय शंकर मिश्र

भगवान् तराजू के एक पलड़े के अन्दर बैठ गये। दूसरे पलड़े में सारे गहने, हीरे, पन्ने रखे जाने लगे। लेकिन जो ब्रह्माण्ड को पेट में लेकर बैठा हो, उसे द्वारिका के धन से कहाँ पूरा होना है। सारा का सारा धन दूसरे पलड़े पर रख दिया लेकिन जिस पलड़े पर भगवान बैठे थे वह बैसे का बैसा नीचे लगा रहा, ऊपर नहीं हुआ। नारद जी ने कहा देख लो, तुला तो बराबर हो नहीं रहा है, अब मैं भगवान् को ले जाऊँगा। सब कहने लगे अरे कोई उपाय बताओ ? नारद जी ने कहा कोई उपाय नहीं है। अन्य सब लोगों ने भी अपने अपने हीरे पन्ने लाकर डाल दिये लेकिन उनसे क्या होना था। वे तो त्रिलोकी का भार लेकर बैठे थे। नारद जी ने सोचा अपने को अच्छा चेला मिल गया, बढ़िया काम हो गया। उधर सभी रानियाँ चीख रही थीं। नारद जी प्रसन्नता के मारे इधर ऊधर टहलने लगे। भगवान् ने धीरे से रुक्मिणी को बुलाया। रुक्मिणी ने कहा कुछ तो ढंग निकालिये आप इतना भार लेकर बैठ गये, हम लोगों का क्या हाल होगा ?

भगवान् ने कहा ये सब हीरे पन्ने निकाल लो, नहीं तो नारद जी मान नहीं रहे हैं। यह सब निकालकर तुलसी का एक पत्ता और सोने का एक छोटा सा टुकड़ा रख दो तो तुम लोगों का काम हो जायगा। रुक्मिणी ने सबसे कहा कि यह नहीं हो रहा है तो सब सामान हटाओ। सारा सामान हटा दिया गया और एक छेटे से सोने के पतरे पर तुलसी का पता रखा गया तो भगवान् के वजन के बराबर हो गया। सबने नारद जी से कहा ले जाओ तूला दान।

डॉ० विजय शंकर मिश्र

नारद जी ने खुब हिलाडुलाकर देखा कि कहीं कोई डण्डी तो नहीं मार रहा है। नारद जी ने कहा इन्होंने फिर धोखा दिया। फिर जहाँ के तहाँ यह लेकर क्या करूँगा ? उन्होंने कहा भगवन् ! यह आप अच्छा नहीं कर रहेहैं, केवल रानियों की बात सुनते हैं, कभी मेरी तरफ भी देखो। भगवान् ने कहा नारद ! आपकी तरफ ही देखता हूँ। आप सारे संसार के स्वरूप को समझ कर फिर मोह के रास्ते जाना चाहते हैं, तो मैं आपको गलत राह पर कैसे जाने दे सकता हूँ। तब नारद जी ने समझ लिया कि भगवान् ने जो किया सो ठीक किया। नारद जी ने कहा एक बात मेरी मान लो। आपने मुझे तरह-तरह के नाच अनादि काल से नचाये और मैंने भी तरह-तरह के खेल आपको दिखाये। कभी मनुष्य, कभी गाय इत्यादि पशु, कभी इन्द्र वरुण आदि संसार में कोई ऐसा स्वरूप नहीं जो चौरासी के चक्कर में किसी न किसी समय में हर प्राणी ने नहीं भोग लिया। अनादि काल से यह चक्कर चल रहा है, सब तरह से आपको खेल दिखाया। आप मेरे को ले जाते रहे और मैं खेल करता रहा। अगर आपको मेरा कोई खेल पसंद आ गया हो तो आप राजा की जगह पर हैं और मैं ब्राह्मण हूँ तो मेरे को कुछ इनाम देना चाहिये। वह इनाम यही चाहता हूँ कि मेरे शोक मोह की भावना निवृत्त होकर मैं आपके परम धाम में पहुँच जाऊँ। और यदि कहो कि तूने जितने खेल किये सब बेकार हैं, तो भी आप राजा हैं। जब कोई बार-बार खराब खेल करता है तो राजा हुक्म देता है कि इसे निकाल दो। इसी प्रकार यदि मेरा खेल आपको पसन्द नहीं आया है तो फिर आप कहो कि इसको कभी संसार की नृत्यशाला में नहीं लाना है। तो भी मेरी मुक्ति है।

भगवान् बड़े प्रसन्न होकर तराजू से उठे और नारद जी को छाती से लगाया और कहा आपकी मुक्ति तो निश्चित है।

डॉ० विजय शंकर मिश्र

पत्रकारों को धमकी के आरोप में गिरफ्तार लोगों को आसानी से जमानत भी नही मिलेगी

पत्रकार के काम में बाधा डालने पर होगी अब कठोर कार्यवाही हाईकोर्ट ने पत्रकारों के सम्मान को सुरक्षित करने के उद्देश्य से बताया कि पत्रकार स्वतंत्र है उनके साथ गलत व्यवहार करने वालों पर तुरंत कानूनी कार्यवाही हो हाईकोर्ट की टिपण्णी के बाद पीएम और सीएम का भी ऐलान आया है कि पत्रकारों से अभद्रता करने वालो पर ५०००० हजार का जुर्माना एवं पत्रकारों से बदसलूकी करने पर ३ साल की जेल हो सकती है पत्रकारों को धमकाने वाले को २४ घण्टे के अंदर जेल भेज दिया जायेगा।

लाल निशान में खुला शेयर बाजार, सेंसेक्स 190 अंक गिरा

मुंबई । भारतीय शेयर बाजार के कारोबारी सत्र में कमजोर शुरुआत हुई। वैश्विक संकेत कमजोर होने के कारण बाजार के ज्यादातर सूचकांक लाल निशान में खुले। सुबह ९:४० तक, सेंसेक्स १९० अंक या ०.२६ प्रतिशत की गिरावट के साथ ७३,८१५ और निफ्टी ४४ अंक या ०.२० प्रतिशत की गिरावट के साथ २२,४५७ अंक पर था। मिडकैप और स्मॉलकैप शेयरों में ज्यादा गिरावट देखी जा रही है। निफ्टी मिडकैप १०० इंडेक्स ११४ अंक या ०.२२ प्रतिशत की गिरावट के साथ ५१,७५४ अंक और निफ्टी स्मॉलकैप १०० इंडेक्स ६८ अंक या ०.४० प्रतिशत की गिरावट के साथ १६,९४१ अंक पर है। बाजार में उतार-चढ़ाव दर्शाने वाले इंडिया विक्स शुरुआती कारोबार में ८ प्रतिशत बढ़ गया है और यह २२.९९ अंक पर पहुंच गया। सेंसेक्स पैक में १५ शेयर हरे निशान में और १५ शेयर लाल निशान में हैं। जेएसडब्लू स्टील, कोटक महिंद्रा बैंक, टाटा स्टील, पावर ग्रिड, एनटीपीसी और एसबीआई टॉप गेनर्स हैं, जबकि नेस्ले, एक्सिस बैंक, अल्ट्राटेक सीमेंट, एचयूएल और एमएंडएम टॉप लूजर्स हैं। एशिया के ज्यादातर बाजारों में लाल निशान में कारोबार हो रहा है। अमेरिकी बाजार सोमवार को गिरावट के साथ बंद हुए। डाओ करीब आधा प्रतिशत फिसला।

ग़ज़ल के कुछ शे'र

आइये आमने सामने बात हो.
ये मिलन क़ी घड़ी है मुलाक़ात हो..

हम तुम्हारी सुनें तुम हमारी सुनो..
ज़िन्दगी क़ी न जाने कहाँ रात हो.

फैयाज़ परवाना

अबतो लगने लगा हर इक पल आख़री.
मेरे होठों पे गंगा का जल आख़री..

प्यार के बोल आपस में बोला करो.
क्या पता कौन सी हो ग़ज़ल आख़री..

फैयाज़ परवाना

यह रचना दिल को छू गई।

तीन पहर तो बीत गये,
बस एक पहर ही बाकी है।
जीवन हाथों से फिसल गया,
बस खाली मुट्ठी बाकी है।

सब कुछ पाया इस जीवन में,
फिर भी इच्छाएं बाकी हैंद्ध
दुनिया से हमने क्या पाया,
यह लेखा - जोखा बहुत हुआ,
इस जग ने हमसे क्या पाया,
बस ये गणनाएं बाकी हैं।

इस भाग-दौड़ की दुनिया में
हमको इक पल का होश नहीं,
वैसे तो जीवन सुखमय है,
पर फिर भी क्यों संतोष नहीं !

क्या यूं ही जीवन बीतेगा,
क्या यूं ही सांसें बंद होंगी ?
औरों की पीड़ा देख समझ
कब अपनी आंखें नम होंगी ?
मन के अंतर में कहीं छिपे
इस प्रश्न का उत्तर बाकी है।

मेरी खुशियां, मेरे सपने
मेरे बच्चे, मेरे अपने
यह करते - करते शाम हुई
इससे पहले तम छा जाए
इससे पहले कि शाम ढले

कुछ दूर परायी बस्ती में
इक दीप जलाना बाकी है।
तीन पहर तो बीत गये,
बस एक पहर ही बाकी है।
जीवन हाथों से फिसल गया,
बस खाली मुट्ठी बाकी है।

जीवन की सारी दौड़ केवल अतिरिक्त के लिए है! अतिरिक्त पैसा, अतिरिक्त पहचान, अतिरिक्त शोहरत, अतिरिक्त प्रतिष्ठा द्व यदि यह अतिरिक्त पाने की लालसा ना हो तो जीवन सरल है.

आइए, मंथन करे

ब्लॉकबस्टर फिल्मों का जिम्मा उठाना चाहती हैं कियारा आडवाणी, क्या डॉन 3 और वॉर 2 से पूरा होगा सपना ?

मुंबई। फिल्मों में अपने लिए ठोस किरदार की जगह तलाशती अभिनेत्रियों में कियारा आडवाणी का नाम भी शामिल है। वह खुद के लिए ऐसे रोल्स की तलाश में हैं, जिसमें वह केवल सजावटी गुड़िया बनकर न रहें।

आगामी दिनों में कियारा अडवाणी, डान ३ और वार २ फिल्मों में नजर आएंगी। अपनी फिल्मों के चयन को लेकर कियारा आडवाणी ने एक साक्षात्कार के दौरान कहा, मुझे ऐसी फिल्में करनी हैं, जिसमें कंटेंट के साथ कॉमर्स का मिश्रण हो। मुझे एक्शन काफी समय से करना था। यह जो फिल्में मैं अब कर रही हूं, वह मुझे वह मौके दे रही हैं। जब मैंने शेरशाह फिल्म की थी तो लोगों ने कहा कि यह तो युद्ध पर बनी फिल्म है, कैप्टन विक्रम बत्रा की कहानी है। एक्ट्रेस ने आगे कहा, आप अपने काम से अपना असर छोड़ते हैं। महिला होने के नाते आप अपनी बात भी कहना चाहते हैं। इस वक्त ऐसे रोल करने की तीव्र इच्छा हो रही है, जिसकी जिम्मेदारी पूरी तरह से मेरे कंधों पर हो। मैं भी बड़ी ब्लॉकबस्टर फिल्मों की जिम्मेदारी उठाऊं। मैंने हमेशा महसूस किया है कि क्वालिटी स्क्रीन टाइम किसी भी चीज से बेहतर है। रोल अवधि से जुड़ा नहीं होता है। मैं हमेशा से कंटेंट और कॉमर्स को मिलाना चाहती रही हूं। दर्शक भी दिलचस्प चीजें अपना रहे हैं। हम चाहते हैं कि ऐसी कहानियां लेकर आएं, जो हर किसी के लिए हो और उन तक पहुंचे।

बड़े से बड़े दुखों से मिलेगा छुटकारा, रोजाना बजरंग बाण का पाठ नियमों से करें पालन

सनातन धर्म में मंगलवार का दिन राम भक्त हनुमान जी को समर्पित है। इस दिन बजरंगबली की विशेष पूजा की जाती है और जीवन के संकटों से छुटकारा पाने के लिए व्रत किया जाता है। इससे व्यक्ति की सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती है। मंगलवार के दिन बजरंग बाण का पाठ अवश्य करना चाहिए। इस पाठ को प्रभु की शक्ति और उर्जा का स्त्रोत माना जाता है। बजरंग बाण का पाठ करते समय कई बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए। नहीं तो, नियमों का पालन न करने से पूजा असफल हो सकती है।

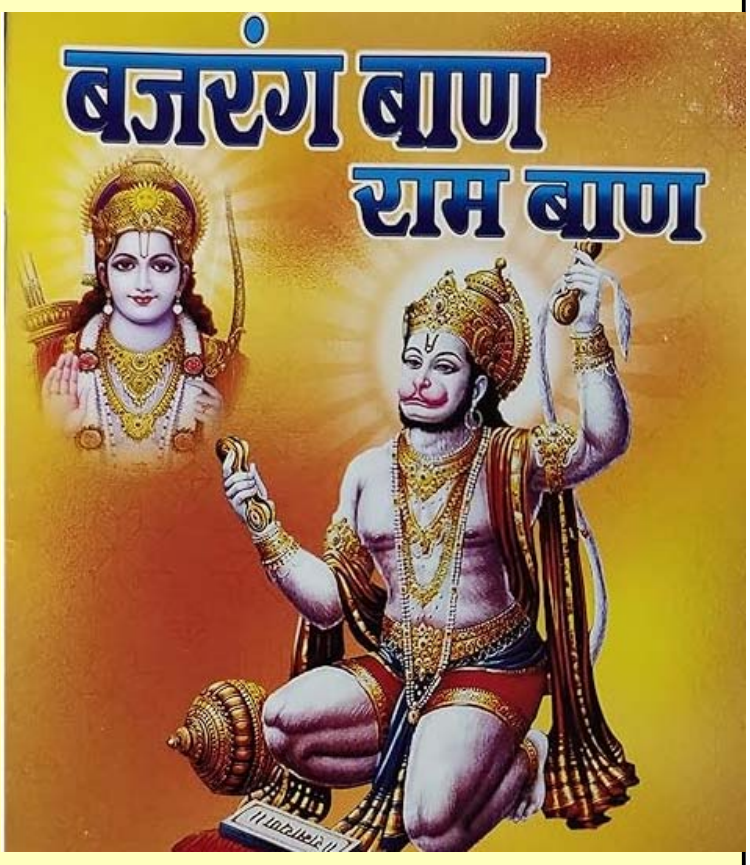

इन बातों का जरुर रखें ध्यान

- अगर आप हनुमान जी की कृपा प्राप्त करना चाहते हैं, तो मंगलवार के दिन बजरंग बाण का पाठ करें।
- शास्त्रो की मानें तो इस पाठ की शुरुआत मंगलवार से करनी चाहिए।
- बजरंग बाण के बाद हनुमान चालीसा का पाठ जरुर करना चाहिए।
- पाठ को अधूरा नहीं छोड़े।
- इसके अलावा पूजा के दौरान लाल रंग के वस्त्र धारण करने चाहिए।
- मांस मदिरा और तामसिक भोजन का सेवन नहीं करना चाहिए।

बजरंग बाण

दोहा

निश्चय प्रेम प्रतीति ते, बिनय करैं सनमान।
तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करैं हनुमान॥

चौपाई

जय हनुमन्त सन्त हितकारी। सुन लीजै प्रभु अरज हमारी।।
जन के काज विलम्ब न कीजै। आतुर दौरि महासुख दीजै।।
जैसे कूदि सिन्धु महि पारा। सुरसा बदन पैठि विस्तारा।।
आगे जाई लंकिनी रोका। मारेहु लात गई सुर लोका।।
जाय विभीषण को सुख दीन्हा। सीता निरखि परमपद लीन्हा।।
बाग़ उजारि सिन्धु महँ बोरा। अति आतुर जमकातर तोरा।।
अक्षयकुमार को मारि संहारा। लूम लपेट लंक को जारा।।
लाह समान लंक जरि गई। जय जय धुनि सुरपुर में भई।।
अब विलम्ब केहि कारण स्वामी। कृपा करहु उर अन्तर्यामी।।
जय जय लक्ष्मण प्राण के दाता। आतुर होय दुख हरहु निपाता।।
जै गिरिधर जै जै सुखसागर। सुर समूह समरथ भटनागर।।
हनु हनु हनुमंत हठीले। बैरिहिं मारु बज्र की कीले।।
गदा बज्र लै बैरिहिं मारो। महाराज प्रभु दास उबारो।।
ऊँकार हुंकार प्रभु धावो। बज्र गदा हनु विलम्ब न लावो।।
ह्रीं ह्रीं ह्रीं हनुमंत कपीसा। ऊँ हुं हुं हुं हनु अरि उर शीशा।।
सत्य होहु हरि शपथ पाय के। रामदूत धरु मारु जाय के।।
जय जय जय हनुमन्त अगाधा। दुःख पावत जन केहि अपराधा।।
पूजा जप तप नेम अचारा। नहिं जानत हौं दास तुम्हारा।।
वन उपवन, मग गिरिगृह माहीं। तुम्हरे बल हम डरपत नाहीं।।
पांय परों कर ज़ोरि मनावौं। यहि अवसर अब केहि गोहरावौं।।
जय अंजनिकुमार बलवन्ता। शंकरसुवन वीर हनुमन्ता।।
बदन कराल काल कुल घालक। राम सहाय सदा प्रतिपालक।।
भूत प्रेत पिशाच निशाचर। अग्नि बेताल काल मारी मर।।
इन्हें मारु तोहिं शपथ राम की। राखु नाथ मरजाद नाम की।।
जनकसुता हरिदास कहावौ। ताकी शपथ विलम्ब न लावो।।
जय जय जय धुनि होत अकाशा। सुमिरत होत दुसह दुःख नाशा।।
चरण शरण कर ज़ोरि मनावौ। यहि अवसर अब केहि गोहरावौं।।
उठु उठु चलु तोहि राम दुहाई। पांय परों कर ज़ोरि मनाई।।
चं चं चं चं चपत चलंता। ऊँ हनु हनु हनु हनुमन्ता।।
ऊँ हँ हँ हांक देत कपि चंचल। ऊँ सं सं सहमि पराने खल दल।।
अपने जन को तुरत उबारो। सुमिरत होय आनन्द हमारो।।
यह बजरंग बाण जेहि मारै। ताहि कहो फिर कौन उबारै।।
पाठ करै बजरंग बाण की। हनुमत रक्षा करै प्राण की।।
यह बजरंग बाण जो जापै। ताते भूत प्रेत सब काँपै।।
धूप देय अरु जपै हमेशा। ताके तन नहिं रहै कलेशा।।

दोहा

प्रेम प्रतीतहि कपि भजै, सदा धरैं उर ध्यान।
तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करैं हनुमान।।

मीन राशि के जातकों को झेलनी पड़ सकती है शारीरिक परेशानी, जानिए क्या कहता है टैरो कार्ड रीडिंग

मनुष्य के स्वास्थ्य से ज्यादा जरूरी कुछ भी नहीं हो सकता है। इसलिए जब भी सेहत की बात आती है, तो लोग सजग हो जाते हैं। फिर चाहे सेहत से जुड़ा राशिफल ही क्यों न हो। ऐसे में हम इस आर्टिकल के जरिए एक ऐसी राशि का टैरो कार्ड प्रेडिक्शन आप तक लेकर आ रहे हैं, जो मुख्य रूप से आपको स्वास्थ्य से जुड़ी जानकारी देगा। आज हम आपको मीन राशि की सेहत के बारे में जानकारी देने जा रहे हैं। तो आइए जानते हैं कि सेहत के मामले में साल २०२४ मीन राशि के जातकों के लिए कैसा रहने वाला है। टैरो कार्ड के मुताबिक इस साल मीन राशि के जातकों को सेहत में थोड़ी परेशानी झेलनी पड़ सकता है। इस साल इस राशि के जातकों को शारीरिक कष्ट उठाना पड़ सकता है। आपको शरीर में दर्द, शरीर के किसी हिस्से में चोट और सूजन आदि की समस्या हो सकती है। वहीं लगातार गिरता स्वास्थ्य आपको मानसिक तनाव दे सकता है। हालांकि ऐसी स्थितियां सिर्फ शुरूआती तीन महीनों में रहेंगी। इसके बाद आपकी सेहत पहले से बेहतर होगी और स्वास्थ्य में तेजी से सुधार देखने को मिलेगा। ऐसे में आपको सलाह दी जाती है कि खुद को तनाव से दूर रखें। इस साल के शुरूआती तीन महीनों तक आपको अपनी सेहत का खास ख्याल रखना होगा। वहीं साल के अंत तक आप किसी धार्मिक यात्रा पर जाए, इससे आपके मन को शांति मिलेगी। साथ ही मन में चल रही तमाम उथल-पुथल को भी शांति मिलेगी। धार्मिक यात्रा मीन राशि के जातकों को मानसिक तनाव से मुक्ति दिलाने का अच्छा माध्यम साबित होगा। इस साल आप ज्यादा से ज्यादा व्यायाम पर फोकस करें। अगर आप व्यायाम नहीं कर सकते हैं, तो ब्रीदिंग एक्सरसाइज जरूर करें। इसके अलावा लॉफ्टर क्लब भी ज्वॉइन कर सकते हैं। क्योंकि जितना अधिक आप खुश रहेंगे, उतना ही आपके सेहत बेहतर होती जाएगी।

कब से शुरु हो रहे हैं चतुर्मास, इन नियमों का करें पालन नहीं होगी कोई परेशानी

इस साल २०२४ में चातुर्मास की शुरुआत १७ जुलाई २०२४, बुधवार से हो रही है। वहीं इसका समापन १२ नवंबर को यानी देवउठनी एकादशी पर होगा। इस समय के दौरान मांगलिक कार्य जैसे विवाह, मुंडन या ग्रह प्रवेश आदि नहीं किए जाते। धार्मिक मान्यता के अनुसार, इस अवधि के दौरान भगवान विष्णु की पूजा-अर्चना की जाती है। कहा जाता है कि इस अवधि के दौरान कई नियमों को पालन किया जाता है। चलिए आपको इन नियमों के बारे में बताते हैं।

यह कार्य बिलकुल ना करें

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार, चातुर्मास के दौरान विवाह संस्कार, मुंडन, गृह प्रवेश आदि शुभ और मांगलिक कार्यक्रम नहीं होते हैं। इस दौरान बाल या दाढ़ी कटवाने की मनाही होती है। ऐसा माना जाता है कि चातुर्मास के समय लंबी यात्राओं पर जाने से भी बचना चाहिए।

खानपान संबंधी नियम

चातुर्मास के समय में जितना संभव हो सके, सात्विक भोजन ही करना चाहिए। इतना ही नहीं, मांस, मछली, अंडे, प्याज और लहसुन जैसा तामसिक भोजन करने से बचें। क्योंकि यह सेहत के लिए और धार्मिक दोनों ही दृष्टि से अच्छा माना जाता है।

इन बातों का भी रखें ध्यान

चातुर्मास के समय में शराब और किसी भी प्रकार के नशे से दूर रहे। इस बात का ध्यान रखें कि इस समय कटु वचन, झूठ बोलना, अनर्गल बातें न बोलें, नहीं तो आपको भगवान विष्णु की नाराजगी झेलनी पड़ सकती है। इस दौरान किसी भी जीव-जंतु पर आत्याचार या हिंसा न करें, बल्कि दूसरों की सहायता करने की कोशिश करें।

करें ये काम

अगर आप चतुर्मास में धार्मिक ग्रंथों को पढ़ते हैं या फिर अपना अधिकांश समय धार्मिक कार्यों में बिताते हैं इससे प्रभु श्री हरि आपसे अति प्रसन्न होंगे। इससे साधक के जीवन में सुख-समृद्धि होगी। कहा जाता है कि इस अवधि के दौरान जमीन सोना और मौन रहना लाभदायक होता है।

गीत

चाहे गजल लिखो या गीतिका, गीत, छंद उसमें काफिया अर्थात तुकांत का बहुत महत्व होता है। जहां तक महत्व काफीये का है,, रचना में काफिया बदल बदल कर प्रयोग करना चाहिए वैसे कुछ महान साहित्यकारों ने एक या दो काफियों में पूरी रचना लिख दी है लेकिन उसमें वह आनंद नहीं आता है इसलिए रचना में काफीया जानदार, शानदार और वजनदार साथ ही हर शेर में नया काफीया होना चाहिए। और मापनी का विशेष ध्यान रखना बहुत आवश्यक है

जय श्री कृष्णा

राष्ट्रहित में लक्ष्य हमारा फिर से मोदी जी!

मैं चुनाव तक मोदीजी का प्रचार देशहित में कर रहा हूँ, अगर किसी भी सज्जन को कोई तकलीफ हो तो मेहरबानी करके तब तक मुझे इस बारे में ज्ञान ना बाटें! क्योंकि, अपने बहुमूल्य व्यस्ततम समय मे से कुछ

समय निकालकर हर दिन मोदी जी के समर्थन में पोस्ट करता हूँ इसलिये नहीं की भाजपा समर्थक हूँ बल्कि इसलिए कि जब हमारे बच्चे बड़े होकर यह पूछेंगे कि जब देश के सारे गद्दार भ्रष्टाचारी और देशी विदेशी देशद्रोही एक होकर देशभक्त मोदी जी से लड़ रहे थे तो आप क्या कर रहे थे! राष्ट्रहित में लक्ष्य हमारा फिर से मोदी जी!

अनोखी चिंता

बहुत चिंता हो रही है, देश का बुरा हाल है, बहुत विकट स्थिति से गुज़र रहा है......

गाड़ियों के शोरूम पर जाईये, नए मॉडल्स पे वेटिंग चल रही है, ग्राहकों को ६-६महीने तक गाड़ियों का इंतेजार करना पड़ रहा है !

रेस्टोरेंट में खाली टेबल नहीं मिल रही है , लाइन लग रही है बहुत से रेस्टोरेंटस पर !

शॉपिंग मॉल में पार्किंग की जगह नहीं है इतनी भीड़ है।

कई मोबाइल कंपनियों के मॉडल आउट ऑफ स्टॉक हैं , एप्पल लांच होते हुए ही आउट ऑफ स्टॉक हो जा रहा है !

ऑनलाइन शॉपिंग के दौर में भी वर्किंग डे में भी शाम को बाजारों में पैर रखने को जगह नहीं है ,

रोज जाम जैसे हालात पैदा हो जाते हैं !

ऑनलाइन शॉपिंग इंडस्ट्री अपने बूम पर है !!!

मगर लोगो को कह रहे हैं कि पट्रोल के दाम बढ़ने से ऊनके कमर तोड़ दी है।

मेरे घर में जब बेमतलब की लाइटें जलती रहती हैं, पंखा चलता रहता है, टीवी चलता रहता है तब मुझे कोई तकलीफ नहीं होती परन्तु बिजली का दाम बढ़ते ही मेरी अंतरात्मा कराह उठती है जब मेरे बच्चे सोलह डिग्री सेंटीग्रेड पर एसी चलाकर कम्बल ओढ़कर सोते हैं तब मैं कुछ नहीं बोल पाता लेकिन बिजली का रेट बढ़ते ही मेरा पारा चढ़ जाता है।

जब मेरा गीजर चौबीसों घंटे ऑन रहता है तब मुझे कोई दिक्कत नहीं होती लेकिन बिजली का रेट बढ़ते ही मेरी खुजली बढ़ जाती है।

जब मेरी कामवाली या घरवाली कुकिंग गैस बर्बाद करती है तब मेरी जुबान नहीं हिलती लेकिन गैस का दाम बढ़ते ही मेरी ज़ुबान कैंची हो जाती है।

रेड लाइट पर कार का इंजन बन्द करना मुझे गँवारा नहीं, घर से दो गली दूर दूध लेने मैं गाड़ी से जाता हूँ, वीकेंड में मैं बेमतलब भी दस बीस किलोमीटर गाड़ी चला लेता हूँ लेकिन अगर पेट्रोल का दाम एक रूपया भी बढ़ जाए तो मिर्ची लग जाती है।

एक रात दो हज़ार का डिनर खाने में मुझे तकलीफ नहीं होती लेकिन बीस- पचास रुपए की पार्किंग फीस मुझे बहुत चुभती है।

मॉल में दस हज़ार की शॉपिंग पर मैं एक रूपया भी नहीं छुड़ा पाता लेकिन हरी सब्जी के ठेले वाले से मोलभाव किए बगैर मेरा खाना ही नहीं पचता।

मेरे तनख्वाह रीविजन के लिए मैं रोज कोसता हूँ सरकार को लेकिन मेरी कामवाली की तनख्वाह बढ़ाने की बात सुनते ही मेरा बीपी बढ़ जाता है !!

मेरे बच्चे मेरी बात नहीं सुनते, कोई बात नहीं लेकिन प्रधानमंत्री मेरी नहीं सुनते तो मैं उनको तरह - तरह की गालियाँ देता हूँ।

मैं आज़ाद देश का आज़ाद नागरिक हूँ।

हाँ जो सरकार सही ईमानदारी से काम कर रही है,जो देश को बदल रही है वो सरकार मैं बदल दूंगा ,लेकिन खुद ग़लत हूं, खुद को नहीं बदलूँगा।

जगन्नाथ धाम पुरी के भक्ति विज्ञान अकिंचन महाराज का मुलुंड में सत्कार

मुंबई- श्री कृष्ण चैतन्य मिशन के प्रमुख,जगन्नाथ धाम,पुरी के भक्ति विज्ञान स्वामी अकिंचन महाराज के मुंबई आगमन पर केशव पाड़ा,मुलुंड प.पर मुलुंड उत्कल संस्था एवम युवा ब्रिगेड एसोसिएशन द्वारा सत्कार किया गया।इस अवसर पर वरिष्ठ कांग्रेस नेता समाज सेवक डॉ.बाबुलाल सिंह,मुलुंड उत्कल संस्था के अध्यक्ष हरिहर साहू,महासचिव पितांबर साहु, मोहन पाडी,युवाब्रिगेड एसोसिएशन के अध्यक्ष डॉ.सचिन सिंह,केशव पाड़ा के समाज सेवक सुशील सालीयन,मनोहर घोलप ने शाल एवम पुष्प गुच्छ देकर सत्कार किया।

थकान लगे तो शुगर टेस्ट, गंध पता ना चले तो CoVid टेस्ट, अगर हिन्दू होकर हिन्दू धर्म का विरोध कर रहे हो तो DNA टेस्ट करवाएं🙏

कहानी: मार्मिक पीड़ा

एक कोख और एक रक्त से पैदा होकर तमाम शंकाओं और पूर्वाग्रहों में उलझ कर भाई-भाई कब एक दूसरे से दूर हो जाते हैं, खुद जान ही नहीं पाते। प्यार में एक दूसरे के हाथों छीन कर खाने वाले हाथ तब अपने आप को ठगा महसूस करते हैं जब वास्तव में उनका सब कुछ छिन चुका होता है। रिश्ते और रास्ते एक दूसरे से विपरीत जा चुके होते हैं। कितना कष्टकारी होता है जब एक अदालत के सामने दो सगे भाई एक दूसरे की तरफ पीठ करके बैठे देखे जाते हैं द्यकाश! इस मार्मिक पीड़ा को समय रहते दोनों समझ लेते। न्यायालय परिसर में ऐसा नज़ारा अक्सर देखने को मिल जाता है। अधिकांश सलाहकार भी मामले को सुलझाने के बजाय उलझाने का काम करते हैं। करें भी क्यों न आप स्वयं ही तो चल कर गए हैं,और फिर क्या कचहरी में लोग घास छीलने बैठे हैं आज समाज का वास्तविक चित्र कुछ ऐसा ही हो गया है।

कहानीकार :
प्रेम कुमार त्रिपाठी प्रेम
प्रतापगढ़ (उत्तर -प्रदेश)

खुशियां बांटने से अपनी खुशी बढ़ती है

जीवन में सुख भी आता है, दुख भी आता है। बारी-बारी से दोनों आते रहते हैं। जिस व्यक्ति ने भी संसार में जन्म लिया है, वह सुख और दुख से बच नहीं सकता। क्योंकि जिस प्रकृति से सबका शरीर बना है, उस प्रकृति में दोनों हैं, सुख भी और दुख भी। सामान्य बोलचाल की भाषा में लोग सुख को खुशी कह देते हैं, और दुख को गम कह देते हैं।

अब जीवन में जब खुशियां आती हैं, तो लोग बड़े प्रसन्न होते हैं। और कुछ अच्छे स्वभाव के लोग चाहते हैं कि हमारी खुशी और बढ़े। हमारे साथ साथ दूसरों की खुशी भी बढ़े। इसका उपाय है कि अपनी खुशियों को बांटें। खुशियां बांटने से अपनी खुशी भी बढ़ती है, और दूसरों की भी, ऐसा संसार में देखने को मिलता है।

जैसे परिवार में कोई विवाह संस्कार इत्यादि कार्यक्रम होते हैं, तो सब लोग खुशी मनाते हैं। अपने मित्रों संबंधियों परिचितों को भी सूचित करते हैं। मिठाई भी बांटते हैं। सब मिलकर खुशी मनाते हैं। इससे पता चलता है कि खुशियां बांटने से बढ़ती हैं।

और जब कभी जीवन में दुख आता है, कोई दुर्घटना हो जाती है, तब भी लोग अपने मित्रों संबंधियों परिचितों आदि को सूचना देते हैं। उस दुख को भी बांटते हैं। तब दुख बांटने से वह कम हो जाता है। दूसरा व्यक्ति भी आपके दुख से परिचित हो जाता है। यदि उसके पास कोई उपाय होता है, तो वह आपके दुख को दूर करने का प्रयत्न भी करता है। अपनी बुद्धि के अनुसार आपको कुछ सुझाव भी देता है। यदि वह सुझाव सही हो और आप उसको अपना लेते हैं, तो आपका दुख कम भी हो जाता है। तो यह ईश्वर की बड़ी सुंदर व्यवस्था है, कि सुख बांटने से बढ़ता है, और दुख बांटने से कम हो जाता है. ये दोनों ही बातें हमारे आपके जीवन के लिए आवश्यक हैं।

सामान्य नियम तो यही है कि धन आदि वस्तुएं बांटने से कुछ कम हो जाती हैं, परंतु विचित्र बात यह है, कि खुशी बांटने से बढ़ती है। इसलिए जब भी खुशियां बांटने का अवसर हो, तो अवश्य बांटें। इससे वे और अधिक बढ़ेंगी। आप भी सुखी रहेंगे और दूसरों का सुख भी बढ़ेगा।

स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक,
निदेशक दर्शन योग महाविद्यालय
रोजड़, गुजरात।

बनावटी

एक सच सुनोगे
अपने चेहरे के पीछे का
जो शायद तुम कह नही सकते
और करते रहते हो हर क्षण
चुपचाप दो बातें,
आईने में जो दिखता है
तुम्हारा साफ-सुथरा चेहरा,
लेप लगाकर करते हो खूबसूरत,
जो बाहरी दुनियां का बनता है हिस्सा,
जिससे निखरता है तुम्हारा व्यक्तित्व,
जिससे बनती है तुम्हारी पहचान
जिससे जुड़ते हो तुम अनगिनत लोगों से,
और उस पर हर क्षण हंसने,रोने
चिल्लाने,गम्भीरता लाने की
करते हो प्रतिक्रिया,
पर क्या तुम असली चेहरा देखते हो,
दिखा पाते हो
जहाँ तुम हो सबसे अलग-थलग
सिर्फ अकेले हो,
कोई नही है जिससे तुम कह सको,
बता सको अपने उस चेहरे का सच,
जिसे दुनियाँ में कभी आने नही देते,
जिस पर ईमानदारी का रंग चढ़ने नही देते,
जिसको तुम देखने से डरते हो
सच तो सच ही है न,
कभी-कभी वह हो जाता है दृश्य
और जिसके तुम पहले अपराधी हो।

प्रज्ञा तिवारी
सुलतानपुर उत्तर प्रदेश

अहो आश्चर्यम् !

IAS अधिकारी नियाज़ खान ने ब्राह्मणों पर लिखी अपनी पुस्तक ब्राह्मण द ग्रेट का विमोचन उज्जैन महाकाल मंदिर में किया, उन्होंने लिखा कि ब्राह्मण नहीं होते तो देश का कोई इतिहास ही नहीं होता, ब्राह्मणों ने ही समय समय पर अपना बलिदान देकर इस देश को बचाया है ! पुस्तक में ब्राह्मणों गौरवशाली इतिहास का वर्णन है। अब यह आश्चर्यम् नहीं तो और क्या होगा की नियाज खान को ब्राह्मणो का महत्व समझ में आ गया लेकिन देश के लाखो हिन्दू - यहाँ तक की स्वयं ब्राह्मणकुल में जन्मे भी अपनी आभा को समझ नहीं पाते ??

ज्ञान सरोवर
(हिन्दी साप्ताहिक)
स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक पूजा प्रसाद पाण्डेय द्वारा नवभारत प्रेस लि. नवभारत भवन, प्लाट नं.13, सेक्टर-8, सानपाड़ा (पूर्व) नवी मुम्बई 400706 (एम.एस.) से मुद्रित तथा 11 गोकुलेश सोसायटी, पंडित मदन मोहन मालवीय रोड, मुलुण्ड (प.) मुम्बई 400080 (एम.एस.) से प्रकाशित।
सम्पादक
पूजा प्रसाद पाण्डेय
मो0- 9833567799
R.N.I.No.MAHHIN/2009/27377
Email: editor@gyansarovar.org
www.gyansarovar.org

समाचार पत्र में प्रकाशित समाचारों/लेखों में लेखकों तथा संवाददाताओं के अपने विचार हैं। किसी भी लेख/समाचार की जिम्मेदारी प्रकाशक/सम्पादक की नहीं होगी। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र मुम्बई न्यायालय होगा।